National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact FIctor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 138-139

भीष्म साहनी का "कबीरा खड़ा बजार में" व्यवस्था पर व्यंग्य

डॉ0 नीना शर्मा

आचार्या, हिन्दी विभाग, आणंद आर्ट्स कोलेज, आणंद, गुजरात

प्रस्तावना

भीष्म साहनी जी का साहित्य में पदार्पण एक नयी दिशा थी उस समय देश विभाजन के कारण समाज की परिस्थितियां विषम बनी हुई थी | स्वंतंत्रता के बाद स्थितियों में अंतर आ गया था | कोई भी साहित्यकार अपनी युगीन परिस्थितियों से कटकर नहीं रह सकता प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से ये ये परिस्थितियों उसके लेखन को प्रभावित करती है | भीष्म साहनी जी के समय जहाँ देश डॉ टुकडो में बँटा हुआ था | वही वैज्ञानिक तरक्की भी हो रही थी | जहाँ युद्ध नाद सुनाई दे रहा था | वाही मानविय मूल्य भी स्थापित होने लगे थे| यह अवश्य है कि विभाजन की त्रासदी का "तमस" चारो तरफ फैला था | लेकिन भीष्म साहनी का कबीर अभी भी उस अंधकार से लड़ने के लिए तैयार और तत्पर था | उनके साहित्य में कलम का चमत्कार देखने को मिलता है अतित के माध्यम से वर्तमान की व्याख्या करने की ललक दिखाई देती है | यह अवश्य है कि जहाँ देश की आजादी की प्रसन्नता थी वहाँ आजादी के बाद कई समस्याए मुँह चढ़ाए यथावत कड़ी थी | देश के आम आदमी के सामने भ्रष्ट राजनीति का नंगा चेहरा खड़ा था जहाँ केवल स्वार्थ की राजनीति थी तो रिश्वतखोरी शोषने का चक्र में आम आदमी पिसता चला जा रहा था | यह स्थितियां गाँव या शहर की नहीं थी पुरे देश की थी |

सामाजिक जीवन में भी रिश्ते संबंध परिवार सभी एक नाजुक दौर से गुजर रहे थे परिभाषाए धीरे धीरे बदलने लगी थी | व्यक्ति और व्यक्ति के बिच के संबंध समाप्त होने लगे थे परिवार में विखराट समाज |

कबीरा खड़ा बजार में....यह साहनी जी को पहला नाटक हानूश है | इस नाटक में मध्यकालीन युग की घटनाओ को आधार बनाकर कबीर को केद में रखकर लिखा गया नाटक है | कबीर भक्तिकाल की निर्गुण धारा के प्रमुख कवि रहे | जिन्होंने अपने समय में विविध रुढियो एवं धार्मिक मान्यताओ पर प्रहार किया कबीर किसी एक धर्म विशेष के विरोधी नहीं थे उन्होंने उन परंपराओ और रुढियो तथा अंधविश्वास पर प्रहार किया है जो भक्ति के रूप में विकृत कर रही थी | गिरीश रस्तोगी ने एक प्रश्न उठाया है कि आदिकाल से लेकर आज तक कई कवि हुए है भक्तिकाल में भी तुलसी, सुर, जैसे कवि हुए लेकिन कबीर को लेकर ही अधिकोश नाट्यकारो ने उसे अपने नाटक का विषय क्यों बनाया है | वह स्वयं कहते है कि "कबीर का व्यक्तित्व हिन्दी साहित्य में संघर्ष, विद्रोह पौरुष का माननीय मूल्यों का क्रांतिकारी व्यक्तित्व रहा है | एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने मानविय संवेदना और प्रगतिशील चेतना को प्रतिष्ठित किया, जिसने निर्भीकतापूर्वक पुरानी परंपराओ, रुढियो, अंधविश्वासों और पाखण्ड की साम्प्रदायिकता का खुलकर विरोध किया |"[1] भीष्म साहनी के अतिरिक्त भी कई नाट्यकारो ने कबीर को लेकर नाट्य की रचना की है | प्रमुख नाटक है इकतारे की आँख कहे कबीर सुनो भाई साधो, काशी का जुलाह | आदि |

"कबीर खड़ा बजार में" में भीष्म साहनी ने कबीर के माध्यम से समाज के मध्यमवर्ग, निम्नवर्ग, के शोषित पीडितो का मसीहा बनकर आज भी जीवित है | और लेखक का उद्देश्य कबीर के माध्यम से संघर्ष की कथा को व्यक्त किया गया है | "साहनी का उद्देश्य इस नाटक में कबीर की कथा कहना नहीं है| उनके युग- चिन्तन कार्यो, अडिग – जीवन्त – साहसी व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करना है | कबीर के युग को सम्पूर्ण भारतीय समाज की विभिन्न विकृतियों से जोड़ देना नाट्य लेखन का कौशल है | सामाजिक जड़ता और मानसिक जड़ता दोनों को तोड़ता हुआ यह नाटक वर्तमान संदर्भ में अधिक प्रासंगिक और स्थायी प्रेरणा – स्त्रोत की तरह लगता |"[2] कबीर का काव्य उस व्यवस्था से टकराता है जो व्यवस्था धर्म पर टिकी है जिसमे व्यक्ति से बड़ा धर्म है और अंधविश्वास तथा रुढियो की बेडिया है जिसे तोड़ने के लिए कबीर को बजार में आना पड़ता है | साथ ही क्रूर राजनैतिक जंजीरों को भी तोड़ता है| विरोध से विद्रोह तक का सफर कबीर को कई संघर्षो से रूबरू करता है |

संघर्ष करते चरित्र : कबीर खड़ा बजार में कबीर के व्यक्तित्व से लेकर सत्ता और समाज के विविध चरित्रों को उजागर किया है | इस नाटक में कबीर, नुरा, नीमा, कायस्थ सिकार लोदी जैसे पात्र है जो सभी आज की व्यवस्था को उजागर करते है |

इसमें कबीर मुख्य पात्र के रूप में आता है | जो सामाजिक रुढियो पर समय समय पर प्रहार करता है | "कबीर आधुनिक प्रतिबद्ध इंसान से प्रतिक है | उसे धर्मान्धता से घृणा है | वह समाज में प्रचलित धार्मिक अंधविश्वासों और बाह्यआडम्बरो के प्रति विद्रोह करता है |"[3] कबीर पुरे नाटक में बचपन से ही विद्रोही प्रवृत्ति के रहे है | वह निर्गुण के उपासक रहे है क्योंकि आस्था और विश्वास के नाम पर मात्र आडम्बर का ही बढ़ावा मिलता है |

कबीर अपने माता पिता से भी त्याग करते है कबीर की माँ ही है जो उसके दुःख की सहभागी है | "करतार ने माई को कैसा बनाया है न में उनका बेटा न वह मेरी माई फिर भी सारा वक्त वो मुझे अपनी छाव में लिए रहती है |"[4] जितनी निष्ठा से कबीर अपने बेटे होने का उत्तरदायित्व निभाते है उसी प्रकार एक पति की भूमिका भी निभाते है | ऐसे पति अपनी पत्नि को अपने प्रेमी के साथ भेजने तक को तैयार हो जाता है |

कबीर का चरित्र ऐसी कर्मयोगी इंसान का प्रतिनिधिनित्व करते है | जो विद्रोही लेकिन सामाजिक एवं राजनैतिक विषमताओ पर व्यंग्य करते है |

वही नूरा का चरित्र आत्मसंतोषी जीत है और समाज के नियमो से डरने वाला भी है लेकिन अनुशासनप्रिय है जो कबीर के साथ कई बार नुरा का व्यवहार कठोर हो जाता है | नूरा एक संवेदनशील व्यक्ति है जो त्याग गये बच्चे को अपने बेटे की तरह पालता है | साथ ही कठोर पश्चिमी है अपने परिवार का पालन पोषण अपने कठोर परिश्रम से करता है |

नीमा एक समर्पित पत्नि तथा स्नेही माँ के रूप में उसका चरित्र मिलता है | बेटा खो देने का डर हमेशा उसके मन में रहता है इसलिए कबीर से सत्य छिपाती है | जब भी कबीर मुल्लाओ पंडितो का विरोध करता ही और कबीर को कोडी की मार झेलनी पडती है ऐसे समय में माँ का हृदय छलनी हो जाता है |

कबीर की पत्नी लोई एक ऐसी गृहिणी है जिसमे बचपन की किलकारिया है | भोली भाली एक निश्चल बालिका के रूप में ही वह दिखाई देती है | साथ ही बचपन से किशोरी बन कर वह कबीर के जीवन में प्रवेश करती है | लोई के मन में कोई दुरात छिपत नहीं है | वह तो केवल अपने विवाह पूर्व की प्रेम कथा का भी पति के सामने कहने से नहीं हिचकिचाती है | स्पष्ट वक्ता है वह पति के घर की असुविधा के बारे में भी कहना नहीं चुकती है |

वही कोतवाल आज के अधिकारियो की तरह संकेत करता है | कबीर के समय में ही नहीं आज के समय में भी यही परिस्थितियाँ है | वह अपने कार्य के प्रति जितना सजग है उतना ही क्रूर है | वह कबीर पर कोड़े लगवाता है | उसकी क्रुरता इतनी की वह नगर के चोक में राहजनों को हाथी से भी कुचकर मार देता है | यही क्रुरता आज भी है जहाँ बिना किसी कारण व्यक्ति की संवेदनाओ को कुचला जाता है |

सिंकदर लोदी सत्ता के प्रतिक के रूप में आया है | जो रुढ़िवादी है | वह कबीर से मिलने आता है उसके विचार सुनकर प्रभावित भी होता है लेकिन कबीर की स्पष्ट बातो को सुन कर उसके सुर बदल जाते है |

व्यंग भरे संवादों की चटकती भाषा : "भीष्म साहनी के नाट्यो की संवाद सृष्टि के संदर्भ में स्वीकारना होगा कि सुगठित संवादों से कृति में एक विशिष्ट वातावरण की गरिमा के साथ स्वन्दनपूर्ण रस जीवन में परिलंबित होने लगता है |"[5]

"कबीरा खड़ा बजार में" नाटक की भाषा व्यंग से परिपूर्ण है | यह नाटक कबीर पर आधारित है अतः स्वाभाविक है कि इसमें गेय तत्व तो है ही विद्रोह की चिंगारिया भी देखि जा सकती है | इसमें माँ का प्रेम पिता की ताड़ पत्नि का प्यार तथा समाज की उपेक्षा इसकी भाषा में मिलता है | इसके संवाद वर्तमान धार्मिक व्यवस्था पर भी व्यंग्य करते है | जहाँ आज भी धर्म के नाम पर व्यक्ति मरने और मारने पर उतारू हो जाता है |

भक्त: कबिरवा में पुछ रहा था मुह किस ओर करके बैठना होगा ? चढ़ते की ओर ना

कबीर: जिस ओर तुम्हे भगवान् नजर आए |
भक्त: तुम्हे किस ओर नजर आते है ?
कबीर: मुझे तो चारो ओर नजर आते है |"[6]

यही नहीं समाज में साधू संतो की परिभाषा आम आदमी की दृष्टी में अलग है| उनके लिए वह टोना टोटका करते है वही साधू है लेकिन कबीर गृहस्थ थे और साथ ही परिवार के प्रति जिम्मेदार भी थे लोई के संवादों के द्वारा इस पर व्यंग्य किया गया है | कबीर ने राजा के सामने भी सत्य बोलने की हिम्मत करी| कबीर को यही निडरता उन्हें एक संत के साथ साथ सच्चा इंसान भी बनाती है | यही नहीं कबीर के संवाद हमारी सामाजिक असमानता पर भी व्यंग्य करते है |

संदर्भ सूचि

1. हिन्दी नाटक का आत्म संघर्ष : गिरीश रस्तोगी – पृ.२४३
2. वही: पृ.२४३
3. भीष्म साहनी का नाट्य साहित्य: डॉ.प्रकाश कृष्णदेव घुमाले – पृ.२०३
4. कबीरा खड़ा बजार में: भीष्म साहनी - पृ.२५
5. भीष्म साहनी का नाट्य साहित्य: डॉ.प्रकाश कृष्णदेव घुमाले – पृ.२०४
6. कबीरा खड़ा बजार में : भीष्म साहनी –पृ.३९